नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी विश्वविद्यालय की अनूठी पहल

परिसर में बनायी खाद, पानी के पुनर्शोधन से शुष्क क्षेत्र बना हरा-भरा

पानी के एक-एक बुंद को बचाने स्प्रिंकलर का होगा इस्तेमाल

वर्धा, 1 दिसंबर 2018: पथरिली पहाड़ियों पर हरा-भरा और पेड-पौधों से समृद्ध परिसर बनेगा

इसका अनुमान कुछ वर्ष पूर्व किसी ने नहीं लगाया होगा। परंतु महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी

विश्वविद्यालय के परिसर को देखकर आज यहां आने वाले चकित हो जाते है कि कैसे इस शुष्क भूमि को आखों को सुकुन देने वाली हरियाली और एक पर्यटन स्थल का अनुभव देने वाले विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों से आकर्षक बना दिया।

पर्यावरणीय चिंता आज पूरे विश्व का एक मुख्य मुद्दा बना हुआ है। भविष्य में इसके और

भी गंभीर परिणाम हमारे सामने आ सकते हैं, इसे देखते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने अपने निरंतर प्रयास और नव-प्रयोगों से अपने परिसर को आने वाले खतरों का सामना करने के लिए तैयार करने की योजना बनायी। दरअसल इसके स्थापना काल यानी दो दशक पहले वर्धा शहर से बाहर पंचटीला नाम से जाने जानी वाली बंजर जमीन पर पेड-पौधे लगाने का काम प्रारंभ हुआ था। परंतु पानी की कमी के कारण पेड़ों को जीवित रखने की समस्या विश्वविद्यालय के सामने हमेशा ही रहा करती थी। इसकी सफलता और असफलता का सिलसिला चलता रहता था। एक तो पहाड़ी और उसपर विशालकाय पत्थर वृक्षारोपण के लिए बड़ी बाधा बनते थे। परंतु विश्वविद्यालय ने इसपर दूरदर्शिता और निरंतर प्रयासों से विजय हासिल कर ली है। आज यह परिसर सभी के आकर्षण का एक केंद्र बन गया है।

हाल ही के दिनों में इस दिशा में अनेक कदम उठाए गये है जिसके अंतर्गत पूरे विश्वविद्यालय परिसर में पथरिले स्थानों पर निकटवर्ती तालाबों से लाकर मिट्टी डाली गयी और इस पर वृक्षारोपण किया गया। पेड़ों के लिए पानी की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उपयोग

किये गये पानी यानी अपशिष्ट पानी के पुनर्शोधन के उपकरण लगाए गये हैं जिसके द्वारा पुनर्शोधन किए गये जल का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है। साथ ही वर्धा के जल प्राधिकरण द्वारा जल शुद्धिकरण के बाद बचे हुए खराब पानी का उपयोग विश्वविद्यालय में किया जा रहा है। विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के साथ अन्य इकाईयों द्वारा निरंतर वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। उल्लेखनीय है कि जल व्यवस्थापन तथा मिट्टी की व्यवस्था में जिला प्रशासन और जिलाधिकारी श्री शैलेश नवाल का विशेष सहयोग मिला है।

इसी कड़ी में परिसर विकास के डॉ. राजेश्वर सिंह की पहल पर परिसर में कंपोस्ट खाद निर्मित करने का प्रयास प्रारंभ हुआ जिसके फलस्वरुप अभितक लगभग पांच सौ किलो खाद तैयार कर इसे पेड़-पौधों को डाला गया। यह संपूर्ण कार्य विजयपाल पांडे की देखरेख में किया गया। शनिवार,1 दिसंबर को सम्पन्न इस कार्य के दौरान गजानन ठाकरे, नितीन बुधबावरे, प्रफुल्ल गिरमकर, नितीन चंदनखेडे ने सहयोग किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा उपस्थित थे।

पर्यावरण की यह पहल समाज के लिए एक प्रेरणा के रूप में है। इस अवसर पर यह भी निश्चय किया गया कि विदर्भ के इस शुष्क क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालय स्प्रिंकलर के माध्यम से सिंचाई करेगा ताकि पानी का हर बुंद उपयोग में लाया जा सके। पिछले दिनों बरसात के दौरान केंद्रीय औषधी एवं सुगंध पादक संस्थान, लख केंद्रीय औषधीय और सुगंधित पौधा संस्थान, लखनऊ के सहयोग से शुष्क क्षेत्र में पैदा होने वाले पौधें लगाए गये। इन पौधों से तेल तैयार होता है। किसानों के लिए भी ये पौधें उपयोगी सिद्ध होंगे। आने वाले दिनों में इन पौधों को किसानों के लिए भी मुहैया किया जाएगा जिससे वे अपनी खेती में इसे लगाकर आमदनी पा सके। विवि की इस पहल की परिसर में सराहना हो रही है और इसे एक प्रेरक कार्य के रूप में देखा जा रहा है।

हिंदी विश्वविद्यालयाचा अनोखा पुढाकार

परिसरातच तयार केले खत, पाण्याचे पुनर्शोधन करुन शुष्क क्षेत्र झाले हिरवेगार

पाण्याचा एक-एक थेंब वाचविण्यासाठी स्प्रिंकलरचा उपयोग

वर्धा, 1 डिसेंबर 2018: मोठमोठे दगडांनी व्यापलेली टेकडी हिरवीगार आणि झाडांनी समृद्ध होईल असा अंदाज काही वर्षाआधी कोणीच बांधला नसेल. परंतु महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचा परिसर बघून आज येणारे चकित होतात कि या शुष्क भूमिवर डोळयांना सुकुन देणारी हिरवळ आणि एखाद्या पर्यटन स्थळाचा अनुभव देणारी विविध प्रकारची झाडे कशी काय उभी राहिली आहे.

पर्यावरणीय चिंता आज जगाचा एक मुख्य मुद्दा झाला आहे. भविष्यात त्याचे गंभीर परिणाम होऊ शकतात, हे ध्यानात घेवून विश्वविद्यालयाने निरंतर प्रयत्न आणि नव-प्रयोगातून हा परिसर येणा-या धोक्यांचा सामना करण्यासाठी सज्ज करण्याचा मानस बनविला. तसे पाहता स्थापनेपासून म्हणजे दोन दशकापासून शहराच्या बाहेर पंचटीला नावाने ओळख असेलेल्या बंजर जमिनीवर झाडे लावण्याचे काम प्रारंभ झाले. परंतु पाण्या अभावी झाडे जगविण्याचा संघर्ष करावा लागत असे. यश अपयशाचा सिलसिला असाच चालत राहिला. एक तर पहाड आणि त्यावर विशालकाय दगड हे वृक्षारोपणात मोठी बाधा असे. परंतु दूरदर्शिता व निरंतर प्रयत्नातून यावर विजय संपादन करता आला. आज हा परिसर सर्वांच्या आकर्षणाचे एक केंद्र झाला आहे.

काही दिवसांआधी दगडांनी व्यापलेल्या जागेवर जवळच्या तलावांमधून माती आणून त्यावर वृक्षारोपण करण्यात आले. पाण्याची गरज पूर्ण करण्यासाठी वापरलेल्या पाण्याचा उपयोग करुन पुनर्शोधन उपकरणे लावण्यात आली. वर्धेच्या जल प्राधिकरण विभागाच्या जल शुद्धिकरणातून निघालेले खराब पाणी टेकडीवर चढविण्यात आले. राष्ट्रीय सेवा योजनेच्या माध्यमातून वर्षभर वृक्षारोपण मोहिम राबविण्यात येते. उल्लेखनीय असे की जल व्यवस्थापन तथा मातीची व्यवस्था यासाठी जिल्हा प्रशासन आणि खासकरुन जिल्हाधिकारी श्री शैलेश नवाल यांचे विशेष सहकार्य मिळाले.

डॉ. राजेश्वर सिंह यांच्या पुढाकाराने कंपोस्ट खत तयार करण्याचे काम सुरू झाले असून आतापर्यंत पाचशे किलो खत तयार करून झाडांना देण्यात आले. विजयपाल पांडे यांच्या देखरेखीत शनिवार, 1 डिसेंबर रोजी गजानन ठाकरे, नितीन बुधबावरे, प्रफुल्ल गिरमकर, नितीन चंदनखेडे यांच्या सहकार्याने झाडांना खत देण्याची मोहिम हाती घेण्यात आली. यावेळी कुलगुरु प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रकुलगुरु प्रो. आनंद वर्धन शर्मा उपस्थित होते.

पर्यावरणाकरिता हे उदाहरण सर्वांरिता एक प्रेरणा ठरावी. यापुढे स्प्रिंकलरच्या माध्यमातून पाणी देवून पाण्याचा एक एक थेंब उपयोगी लावण्याचा निर्धार यावेळी व्यक्त करण्यात आला. गेल्या पावसाळयात केंद्रीय औषधीय आणि सुगंधित वृक्ष संस्था, लखनौच्या सहयोगातून शुष्क क्षेत्रात येणारी झाडे लावण्यात आली. यापासून तेल निर्मिती होणार आहे. शेतक-यांकरिताही ही झाडे फायदेशीर ठरतील. विश्वविद्यालयाच्या या कार्याची परिसरात प्रशंसा होत असून याकडे एक प्रेरक कार्य म्हणून पाहण्यात येत आहे.